ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं में एस्केरिओसि रोग, उपचार एवं बचाव

डॉ. संजय कुमार मिश्र[१] एवं डॉ. अरविंद कुमार त्रिपाठी[२]

१. पशु चिकित्सा अधिकारी मथुरा उत्तर प्रदेश
२. सहआचार्य पशु औषधि विज्ञान विभाग दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश

इस बीमारी को गोल कृमि बीमारी भी कहते हैं। यह बड़े व छोटे पशुओं का एक प्रमुख परजीवी रोग है। लंबे व गोल एस्केरिस संख्या में अत्याधिक वृद्धि कर आंत एवं पित्त की थैली की नली को पूरी तरह अवरुद्ध कर देते हैं, जिससे कभी-कभी छोटी आंत फट भी सकती है। इस रोग से पशु अत्यंत कमजोर हो जाते हैं। कम उम्र के रोगी बछड़ों व कटड़ों में वृद्धि दर बहुत कम हो जाती है।

जीवन चक्र:

नियोएस्केरिस बिटुलोरम नामक परजीवी गाय भैंसों की आंतों में पाया जाने वाला सबसे बड़ा परजीवी है।
सभी एस्केरिस का जीवन चक्र लगभग एक सा ही होता है परंतु सिर्फ नियो एस्केरिस कोलोस्ट्रम एवं गर्भाशय द्वारा फैलता है। वयस्क एस्केरिस रोगी पशु की आंत में 2 से 5 वर्ष तक जीवित रह जाते हैं। रोगी शरीर में यह प्रतिदिन हजारों की संख्या में अंडे देते हैं। नर व मादा अलग-अलग होते हैं। अंडे गोबर के साथ बाहर निकलते रहते हैं। बाहर सर्दी, गर्मी का इन पर कोई असर नहीं होता है तथा यह वर्षों तक जीवित रहते हैं, लेकिन रेतीले क्षेत्र में जब तेज सीधी धूप से यह कुछ सप्ताहों में नष्ट हो जाते हैं। इन्हीं अंडों से दूषित चारा, पानी आदि को ग्रहण करने से स्वस्थ पशु भी रोग ग्रस्त हो जाते हैं।
वयस्क एस्केरिस-छोटी आंत-अंडे-खाद्य पदार्थों एवं पानी का संक्रमण-पोसद /होस्ट के द्वारा ग्रहण कर लिए जाते हैं -छोटी आंत में इन लारवा का विकास होता है-हैचिंग अर्थात अंडे से लारवा बाहर निकल आता है-
जहां से पोर्टल शिरा द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है- यकृत और फेफड़ों में-यकृत को छतिग्रस्त करता है-फेफड़ों -ब्रोंकाइ-ट्रेकिया-फैरिंक्स-छोटी आंत द्वारा निगल लिया जाता है। (कुल अवधि 8 से 9 सप्ताह)

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पैथोजेनेसिस:

रोग के लक्षण आंतों की दीवारों में दिखाई पड़ते हैं। बड़े आकार के वयस्क एस्केरिस, आंतों में संख्या में वृद्धि कर गुच्छे का रूप धारण कर लेते हैं और आंत में रुकावट कर पूरी तरह बंद कर देते हैं। यहां से एस्केरिस के लारवा जब भ्रमण कर यकृत एवं फेफड़ों में पहुंच जाते हैं तो वहां भी अत्यंत नुकसान पहुंचाते हैं। यकृत में यह फाइब्रोसिस पैदा करते हैं जिससे लिवर पर जगह-जगह सफेद धब्बे से बन जाते हैं।

लक्षण:

गो वंशीय एवं महिश वंशीय-

*बच्चों में दस्त पेट दर्द व सुस्ती।
*रूखी त्वचा पशु की कम वृद्धि दर तथा बछड़े व कटडें मुरझाए हुए लगते हैं।
*शरीर में परजीवियों की संख्या अधिक होने पर पेट दर्द एवं तड़पना इत्यादि।
*भैंस के बच्चों में अत्याधिक मृत्यु दर पाई जाती है।

अश्ववंशीय-

*घोड़ी के बछेड़ों में गाय के बछड़ों जैसे ही लक्षण होते हैं, परंतु बड़े घोड़ों में एस्केरिस पेरीटोनियल कैविटी में भी पाए जा सकते हैं जिससे उन्हें पेरीटोनाइटिस हो सकती है। कम वृद्धि दर , दस्त तथा पेट दर्द होता है।

निदान:

*लक्षणों के आधार पर।
*एस्केरायसिस कम उम्र के पशुओं में अधिक होता है।
*कम वृद्धि दर तथा रूखी त्वचा।
*#सूक्ष्मदर्शी में गोबर के परीक्षण में वयस्क व अंडे दिखाई देते हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

उपचार:

***पिपराजीन** बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभावी उपचार है। इसे 100 से 400 मिलीग्राम प्रति किलो ग्राम शरीर भार के अनुसार अश्ववंशीय एवं गो वंशीय तथा महिश वंशीय पशुओं में देते हैं।

***वरमैक्स**-
भेड़, बछड़ा, और बछेड़ों मैं 1ml प्रति 2.5 किलोग्राम शरीर भार के अनुसार कुत्ते और बिल्ली में 1ml प्रति 4.5 किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देते हैं।

***लेवामिसाल**-
10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार।

***थायाबेंडाजॉल**-बड़े पशुओं के लिए यह अत्याधिक उपयुक्त है। 80 से 100 ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देना चाहिए।

***मीबेनडाजाल:**
500 मिलीग्राम प्रति 100 किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देते हैं।

बचाव:

*गोबर का अच्छी तरह निस्तारण घर से दूर करें।
*छोटे बछड़ों, बछेड़ों व कटडों को बड़ी उम्र के पशुओं से अलग रखें।
*गर्भित पशु में एस्केरिस नहीं हो इसके लिए गर्भकाल के दौरान उचित समय पर उपयुक्त क्रमी नाशक औषधि दिलाएं।

उपरोक्त औषधियों का प्रयोग करने से पूर्व पंजीकृत पशु चिकित्सा अधिकारी से सलाह अवश्य ले लें।